REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 10 | JULY - 2018

भगवानदास मोरवाल के कथा साहित्य में मेवाती समाज के सम्बन्धों का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन

डॉ. वरिन्दरजीत कौर
सहायक प्रोफेसर , हिन्दी विभाग , देव समाज कॉलेज फॉर वूमेन,
फिरोज़पुर शहर।

सारांश :

मनुष्य दूसरे लोगों से पृथक रहकर अपने मानवीय अस्तित्व की रक्षा नहीं कर सकता है। यदि वह मनुष्य की भांति रहना चाहता है और अपने अस्तित्व की रक्षा करना चाहता है तो उसे अपने आस पास के व्यक्तियों से सम्बन्ध स्थापित करने होंगे। समाज इन्हीं सामाजिक सम्बन्धों पर आधारित है तथा इन्हीं सम्बन्धों से समाज की सार्थकता है। समाजशास्त्र में सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन केन्द्र में होता है। भगवानदास मोरवाल वर्तमान हिन्दी कथा साहित्य के एक चर्चित रचनाकार हैं। जिनकी रचनाओं में मेवाती समाज उभर कर सामने आया है। प्रस्तुत शोध में उनके कथा साहित्य में मेवाती समाज के सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से किया गया है।

शोध सार :

साधारणतः समाज शब्द का प्रयोग व्यक्तियों के समूह के लिए किया जाता है परन्तु समाजशास्त्र में समाज व्यक्तियों के समूह का नाम नहीं बल्कि व्यक्तियों के बीच पाये जाने वाले पारस्परिक सम्बन्धों को कहा जाता है। मैकाइवर और पेज का कहना है कि, ''समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों के बारे में हैं, सम्बन्धों के जाल को हम समाज कहते हैं''[1]

"Sociology is about social relationship, the network of relationship, we call society."
R.M. Machivor and C.H. Page

इसी प्रकार राइट का कहना है कि, ''मनुष्य के समूह को समाज नहीं कहा जाता, अपितु समूह के अन्तर्गत व्यक्तियों के सम्बन्धों की व्याख्या का नाम समाज है।''[2]

"Society is not a group of people, It is the system of relationship that exists between the individual of the group."
Wright

अतः समाज सामाजिक सम्बन्धों के जाल को कहते हैं। समाज की रचना केवल व्यक्तियों के इक्ट्ठे हो जाने से नहीं होती बलिक समाज की रचना उन व्यक्तियों में उत्पन्न सामाजिक सम्बन्धों से होती है। समाज में रहते लोग जब एक दूसरे के सम्पर्क में आते हैं और वह एक दूसरे को प्रभावित करते हैं, उनकी पारस्परिक क्रियाओं, प्रतिक्रियाओं के परिणामस्वरूप जो परस्पर सम्बन्ध कायम होते हैं, उन्हें सामाजिक सम्बन्धों की संज्ञा दी जाती है।

समाज की प्रवृत्तियों से साहित्य जन्म लेता है। साहित्य केवल समाज का विश्लेषण ही नहीं, बलिक सामाजिक जीवन की गहराई तक पहुंचने की कोशिश करता है। समाज की गतिविधियों, घटनाओं, विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति साहित्य में होती है। साहित्य समाज का मार्गदर्शक है। वह सामाजिक यथार्थ के नए सृजन का दर्पण है। साहित्यकार समाज से अनुभव ग्रहण करके अपनी रचनाओं के माध्यम से उसे अभिव्यक्त करता है। भगवानदास मोरवाल वर्तमान हिन्दी कथा साहित्य के एक प्रसिद्ध रचनाकार हैं जिन्होंने अपने उपन्यासों तथा कहानियों में हरियाणा के मेवात क्षेत्र का जीवन्त चित्रण किया है।

भगवानदास मोरवाल ने अपने कथा साहित्य में सामाजिक सम्बन्धों के प्रत्येक रूप को अभिव्यक्त किया है। उपन्यास 'काला पहाड़' और 'बाबल तेरा देस में' दोनों की पृष्ठभूमि मेवात क्षेत्र है। ये वही मेवात है जिसने मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर से टक्कर ली थी और जिसने भारत की मिली–जुली तहजीब को आज तक सुरक्षित रखा है। 'मेव' इस मेवात क्षेत्र का बहु संख्यक समुदाय है जो कि इस्लाम धर्म से है, पर वह अपने आप को एक मुसलमान के रूप में नहीं वरन् मेव के रूप में ही पहचानता है। विभाजन के समय गांधी जी के कहने पर पाकिस्तान न जाने वाले ये मेव मुसलमान अटल देश भक्त रहे हैं। अट्ठारह सौ सत्तावन में दो सौ अट्ठावन मेव जाति के लोग शहीद हुए थे। हसन खाँ मेवाती इनका प्रेरक व्यक्तित्व है, जिसने बाबर के साथ न देते हुए राणा सांगा का साथ दिया। मेव एक धर्म परिवर्तित मुसलमान जाति है जो हिन्दू से मुसलमान बने हैं। मूलरूप से कई हिन्दू जातियों से इनका सम्बन्ध रहा है। मेवों में आज भी हिन्दु–जातियों जैसे रीति–रिवाज पाए जाते हैं। मेवात क्षेत्र में हिन्दू और मुस्लिम दोनों धर्मो के लोग एक इकाई के रूप में रहते आ रहे हैं। यह लोग हिन्दू हो या मुसलमान एक दूसरे के बिना किसी भेदभाव के काम आते हैं। सब लोग मिलकर रहते हैं और एक–दूसरे के सुख–दुःख के साथी हैं, ''इस इलाके में आज तलक यामें कोई फिरकाना फसाद न हुओ है, सब सू बड़ी बात तो ई है कि या इलाका में हिन्दू और मेव एक कुणबा की तरह रहता आया है। मजाल है कोई काई की बहाण–बेटी पे आंख तो उठा जाए..... ।''[3]

हिन्दु और मुसलमान दोनों धर्मो के लोग पुत्र प्राप्ति के बाद पीर दादा खानू की समाधि पर चादर चढ़ाते हैं। उपन्यास ''काला पहाड़' में बनवारी के पैदा होने पर मनीराम (जो हिन्दू है), सलेमी द्वारा लड्डू की मांग करने पर कहता है, ''फिकर क्यों करे है यार, जब तोकू गुड़ खिवा दिया है तो लड्डू भी खवांगा.... पर पहले छोरा की दादा खानू और पंचपीर पे गलेप तो चढ़ा देयो।''[4]

इस तरह दादा खानू की समाधि पर चादर चढ़ाना हिन्दू मुस्लिम लोगों के सम्बन्धों में व्याप्त एकता का प्रतीक है। सब लोक सभी की जरूरतों को पूरा कर देते हैं। गाँव में ऐसे लोग रहते हैं जिन्हें जड़ी–बूटियों का बहुत ज्ञान होता है वह गर्भवती महिलाओं की चाल देखकर ही बता देते हैं कि लड़की होगा या लड़का। इन लोगों में पारिवारिक स्नेह दिखाई देता है तथा यह लोग एक दूसरे को भाई, काका, बाबा, बहन, बेटी इत्यादि शब्दों से सम्बोधन करते हैं। मेवाती समाज में जो एकता दिखाई देती है वह उन्हें बुरे वक्त में भी खण्डित नहीं होने देती।

उपन्यास 'बाबल तेरा देस में' भी हिन्दु–मुस्लिम लोगों के सामाजिक सम्बन्धों में प्रेम व सद्भावना दिखाई देती है। इस उपन्यास की पृष्ठभूमि भी मेवात है। गांव में रहते यदि एक घर पर कोई मुसीबत आती है तो सारा गांव उसकी मदद करने के लिए दौड़ पड़ता है। गांव के धन सिंह की पोतियों का विवाह जबरदस्ती करवाने पर उतारू जग्गी को हाजी चाँदमल ने ललकारा, ''सुन रे रिश्तेदार, या भोला में मत रहियो के ये दोनूं बाप–बेटा इकला हैं..... एक बात और ध्यान में धर ले के ये छोरी सिरफ हीरा की न हैं, पूरा गाँव की हैं। अगर अब की बार मुँ सू ऐसी बात निकाली तो लाहस बिछ जांगी।''[5]

ऐसे मदद करते हैं ये गांव के लोग एक दूसरे की और तब यह नहीं देखा जाता कि वे जिसकी मदद कर रहे हैं वह हिन्दू है या मुसलमान। ''कैसी बात कररा है चौहसाब, बहु–बेटी भी कोई हिन्दू–मुसलमान की होवे है, ये तो पूरा गाँओ –बसती की होवे हैं।''[6]

इस प्रकार गांव के एक आदमी की समस्या पूरे गांव की समस्या बन जाती है और जिसे दूर करने या हल करने के लिए हर संभव कोशिश करते हैं, जिसके प्रभावाधीन पुलिस को भी उनके आगे झुकना पड़ता है, ''बाबा, आप बेफिक्र रहो। आईन्दा आँच भी नहीं आएगी। अगर अब कभी ये जगन प्रसाद ऐसी नीच हरकत करे तो सीधे मेरे पास आना।''[7] लोगों के सामाजिक सम्बन्धों में एकता व शक्ति के परिणाम स्वरूप धनसिंह के परिवार पर आया संकट टल जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि उपन्यास 'काला पहाड़' और 'बाबल तेरा देस में' दोनों में मेवाती समाज का यथार्थ चित्रण हुआ है। विभिन्न सम्प्रदायों के लोग यहां एक इकाई के रूप में रहते हैं। इनके सामाजिक सम्बन्ध आपसी प्रेम, सद्भावना और एकता पर आधारित हैं। जिसका सबसे बड़ा कारण यह है कि मेवात हिन्दू–मेव सांझी संस्कृति वाला क्षेत्र है। श्यामचरण दूबे ऐसे क्षेत्र को सांस्कृतिक क्षेत्र कहते हैं। उनका कहना है कि ''ऐसे क्षेत्र में लोगों का नृजातीय मूल, भाषा और सांस्कृतिक विशेषताएं समान हो सकती हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण है उनका सांझा ऐतिहासिक अनुभव, परिस्थितियाँ और पर्यावरण।''[8] अतः जिस समाज व क्षेत्र में सांस्कृतिक एकता, समान भाषा तथा सांझा ऐतिहासिक अनुभव व परिवेश हो वहां विविधता में एकता स्थापित रहती है। एक अटूट रिश्ता हिन्दू और मुसलमान के बीच पूरे मेवात में दिखाई पड़ता है। जहां नाम से कोई सलेमी हो, कोई असलम हो, कोई बनवारी हो, कोई मनीराम हो। दोनों की दिनचर्य अजान से शुरु होती है और अजान के साथ खत्म होती है। जन्म से मृत्यु तक दोनों का जीवन बहुत हद तक एक ही तरह चलता है। इनकी आपसी सद्भावना का दूसरा कारण यह है कि यहां हिन्दू और मुसलमान सदियों से इकट्ठे रहते आ रहे हैं परिणामस्वरूप इनके सामाजिक सम्बन्धों में अपनत्व का भाव उत्पन्न हुआ, जिसे ये लोग अब तक कायम रखते आ रहे हैं। आधुनिक युग में जब धर्मवाद फैलता जा रहा है इस के बावजूद मेवात में सांझी संस्कृति बरकरार है। आयोध्या त्रासदी के पश्चात् घटी हिंसात्मक घटनाएं मेवात की इस सांझी संस्कृति को नुकसान तो पहुंचाती हैं किन्तु उसे खत्म नहीं कर पाती। इस समाज की युवा पीढ़ी के बाबू खाँ, सुभान खाँ जैसे युवक ही सम्प्रदायिक ताकतों से मिलकर इलाके में तनाव पैदा करते हैं। इसका एक बड़ा कारण यह है कि नई पीढ़ी आजादी की कोख से आई है इसीलिए उस पर साम्प्रदायिकता और अलगाववाद का गहरा प्रभाव है, इस गहरे प्रभाव के पीछे स्वार्थी राजनीतिज्ञों का भी बहुत बड़ा हाथ है। परन्तु बुजुर्ग पीढ़ी अभी भी साम्प्रदायिकता, धर्मवाद आदि से अछूती है। भटके युवाओं को वे समझाते हैं, ''बेटा इन कामन् में कुछ भी न धरो है..... अरे, हाजी असरप जैसे आदमी न तो आज तलक कोई न सगा हुआ है, और न होंगा। बेटा ये तो ठाड़ा आदमी है इनको कुछ नि बिगडेगो..... पर तम जैसा बोदा और भोला माणस आपणा घर कू उल्टा हो लेओ.....।''[9] पुरानी पीढ़ी सदियों से चले आ रहे भाईचारे को खत्म नहीं करना चाहती। सलेमी बाबरी मस्जिद गिराए जाने पर उस विदेशी हमलावर के प्रतीक के नष्ट होने पर खुश होता है। मनीराम आर्य समाज मंदिर के स्वामी के मारे जाने पर खुश होता रहता है, ''चलो अच्छो हुओ, कटी कलेश.... कम सू कम एक मुसीबत सू तो पीछे छूटो या इलाका को....।''[10] मेवात की सांझी संस्कृति की यही विशेषता है जो मेवात को टूटने से बचाए रखने की निरंतर कोशिश करती है। उसका तीसरा कारण यह है कि उपन्यास 'काला पहाड़' और 'बाबल तेरा देस में' दोनों मेवात क्षेत्र के ग्रामीण समाज की बात करते हैं। हमारा भारत देश गाँवों का देश है। इसलिए इसकी आत्मा और इसका नैसर्गिक सौन्दर्य गाँवों में है। ग्रामीण समाज में सामाजिक सम्बन्धों का रूप अधिक प्रत्यक्ष और गहरा होता है। सम्बन्धों में पाई जाने वाली सामुदायिक भावना ग्रामीण लोगों को एकता के सूत्र में बांधे रखती है। इस सम्बन्ध में फेचर चाईल्ड कहते हैं कि,''ग्राम पड़ोस की अपेक्षा विस्तृत क्षेत्र है, जिसमें आमने सामने के सम्बन्ध पाए जाते हैं। जिसमें सामूहिक जीवन के लिए अधिकांशतः सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, धार्मिक एवं अन्य सेवाओं की आवश्यकता होती है, जिसमें मूल आवृत्तियों एवं व्यवहारों के प्रति सामान्य सहमति होती है।''[11] इस प्रकार गांवों में संगठन के मुख्य आधार समान सामाजिक–सांस्कृतिक विशेषताएं, हम की भावना, सहयोग तथा अभिन्नता की भावना ग्रामीण लोगों में विकसित होकर उन्हें साथ रहने के लिए प्रेरित करती है। गांव के लोगों में शहरी लोगों की अपेक्षा आपस में ज्यादा मेल–मिलाप होता है। गांव के सभी लोग एक दूसरे को अच्छी तरह जानते हैं और उनकी एक–दूसरे के प्रति हमदर्दी भी रहती तथा आवश्यकता पड़ने पर वे एक दूसरे की पूरी सहायता करते हैं।

उपन्यासों की तरह भगवानदास मोरवाल ने कहानियों में भी ग्रामीण क्षेत्र को अधिक उजागर किया गया है। ग्रामीण सामज में तो सामाजिक सम्बन्धों का एक बहुत बड़ा जाल बुना होता है क्योंकि गांव के लोग नगरीय लोगों की अपेक्षा एक दूसरे के ज्यादा नजदीक होते हैं। साम्प्रदायिक दंगों जैसी बुरी घटनाओं के समय भी लोग अपने–अपने धर्म से ऊपर उठकर एक दूसरे की मदद करते हैं। ''पूरे दिन अतरी, जमीला, फजरी, अशरूफी ने पारों को एक पल के लिए भी अकेला नहीं छोड़ा। बाहर सुल्ली और सुभान खाँ सारा दिन मूढ़ी बिछाएं बैठे रहे। यह पहला मौका था जब सब ने आज पांचो वक्त की नमाज अदा नहीं की।''[12] अतः पारो जिसको बहु–बेटा दंगों के वक्त गांव में अकेला छोड़ गए थे, उसकी रक्षा पूरे गांव के लोग करते हैं। जिसके परिणामस्वरूप पारों को अपने–परायों कें बीच के रिश्तों की वास्तविकता पता चलती है। ऐसे ही हिन्दू–मुस्लिम के बीच प्रेम व

विश्वास की मजबूत डोर कहानी 'झूठा दिन' में दिखाई देती है। आपसी प्रेम व विश्वास के कारण ही दंगाई लोगों के द्वारा भड़काए हबीब को यह महसूस हो जाता है कि सबसे बड़ा धर्म तो मानवता है। सम्प्रदाय से ऊपर आपसी प्रेम है जिसे वह अन्ततः दोबारा फिर प्राप्त कर लेता है और बुद्धन को माँ कह कर गले लगा लेता है।

इसी प्रकार हिन्दू–मुस्लिम लोगों के आपसी सम्बन्धों को उद्घाटित करती है कहानी 'झूठा दिन'। 'साल के तीन सौ पैंसठ दिनों में कोई दिन ऐसा जाता होगा जब या नसीबन बुद्धन से कोई चीज़ न लेती हो या बुद्धन नसीबन से। सुबह से लेकर शाम तक दोनों न जाने कितनी बार एक दूसरे के आंगन की ओर गर्दन निकाले दीख पड़ेगी।''[13]

इस तरह कह सकते हैं कि इन लोगों के सामाजिक सम्बन्ध बहुत मजबूत हैं। सालों से इक्ट्ठे रहते आने के कारण इनमें प्रेम की भावना विद्यमान है तथा दूसरा गांवों का आकार छोटो होने की वजह से वहां के लोग एक–दूसरे को अपना सहारा मानते हैं। फिर चाहे वे किसी भी धर्म, जाति का हो, उसमें सद्भावना अवश्य होती है। मेवात क्षेत्र में हिन्दू–मुस्लिम लोगों के प्रेम तथा एकता से बंधे सामाजिक सम्बन्धों का वर्णन करने के बाद ऐसा महसूस होता है कि यहां रहने वाले हिन्दू–मुस्लिम लोग एकसूत्र में बंधे हुए हैं। अच्छे इन्सानों का सारा गांव सम्मान करता है। 'काला पहाड़' का सलेमी और 'बाबल तेरा देस में' की दादी जैतूनी दो ऐसे पात्र हैं, जिनको गांव के लोग सम्मान देते हैं। क्योंकि ये दोनों समाज व गांव में सद्भाव कायम रखने तथा शांति बनाए रखने के भरसक प्रयास करते दिखाई देते हैं।

परिणामस्वरूप तमाम प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद भी मेवात में सांझी संस्कृति कायम है, जो मेवात को खण्डित नहीं होने देती। सामाजिक सम्बन्ध सामाजिक प्रक्रियाओं पर आधारित होते हैं। जिस प्रकार की सामाजिक अन्तःक्रियाएं–प्रक्रियाएं सामज में होती हैं, लोगों के सामाजिक सम्बन्धों का स्वरूप उसी प्रकार का हो जाता है। समाज में सहयोग व समायोजन जैसी सामाजिक प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप सामाजिक सम्बन्धों का स्वरूप मजबूत रहता है तथा उनमें अटूट रिश्ता तथा एकता कायम रहती है। भगवानदास मोरवाल के कथा साहित्य में अभिव्यक्त मेवाती व ग्रामीण समाज के सामाजिक सम्बन्धों में सहयोग है, परिणामतः वहां सदियों से भाईचारा व अखण्डता बनी हुई है। विभिन्न सम्प्रदायों के लोग सालों से इक्ट्ठे रहते आ रहे हैं परिणामतः वहां सांझी संस्कृति विकसित हुई है जो भारतीय समाज की बहुत बड़ी विशेषता है। इसी विशेषता के कारण हमारे समाज को साम्प्रदायिक ताकतें व समाज विरोधी घटनाओं के घातक परिणामों के बावजूद सामाजिक व सांस्कृतिक एकता व अखण्डता को कायम रखने वाला समाज कहा जाता है।

पाद–टिप्पणी

1. Macivor R.M. and Page, Sociology : An Introductory Analsysis, P.5
2. Wright, Elements of Sociology, P.5
3. मोरवाल भगवानदास, 'काला पहाड़', पृ. 16
4. वही, पृ. 55
5. मोरवाल भगवानदास, 'बाबल तेरा देस में', पृ. 177
6. वही, पृ. 180
7. वही, पृ. 181
8. दूबे श्यामचरण, 'भारतीय समाज', पृ. 32
9. मोरवाल भगवानदास, 'काला पहाड़', पृ. 400
10. वही, पृ. 432
11. उद्धृत, चौहान वी.पी., 'रामदरश मिश्र के कथा साहित्य में ग्राम्य जीवन', पृ. 9
12. मोरवाल भगवानदास, 'अस्सी मॉडल उर्फ सूबेदार', पृ. 82
13. मोरवाल भगवानदास, 'लक्ष्मण रेखा', पृ. 179

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

आधार ग्रन्थ

1. मोरवाल भगवानदास, 'काला पहाड़', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999

2. मोरवाल भगवानदास, 'बाबल तेरा देस में', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004
3 मोरवाल भगवानदास, 'अस्सी मॉडल उर्फ सूबेदार', प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997
4. मोरवाल भगवानदास, 'लक्ष्मण रेखा', सनफ्लावर बुक्स, नई दिल्ली, 2010

सहायक ग्रन्थ

1. चौहान वी.पी, 'रामदरश मिश्र के कथा साहित्य में ग्राम्य जीवन', चिन्तन प्रकाशन, कानपुर, 2004
2 दूबे श्यामचरण, 'भारतीय समाज', नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, 1985

अंग्रेजी पुस्तक सूची

1 Maciver R.M., Page C.H., 'Society: An Introductory Analysis', Macmilan Company, London, 1962.
2 Wright, 'Elements of Sociology' University of London Press, 1942